क्या नापता है आईक्यू टेस्ट?

सुमित त्रिपाठी

किस्से-कहानियों में अक्सर ऐसे पात्र का ज़िक्र आता है जो अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर बड़ी-बड़ी समस्याओं को चुटकियों में हल कर देता है। आम जीवन में यह सुनने को मिल ही जाएगा कि फलां कि बुद्धि तो तेज़ है। हमारी भाषा में कई शब्द और मुहावरे हैं जो बुद्धि या अक्ल की तरफ इशारा करते हैंः कुशाग्र बुद्धि, चतुर-सुजान, मूर्खानंद, अक्ल पर पत्थर पड़ना वगैरह। तो अक्ल या बुद्धि जैसी कोई चीज़ होती है और यह किसी में ज़्यादा होती है और किसी में कम, ऐसा माना जाता है।

आईक्यू टेस्ट एक ऐसा तरीका समझा जाता है जिससे बुद्धिमत्ता नापी जा सकती है - जितना ज़्यादा आईक्यू, आप उतने ही बुद्धिमान। पर क्या वाकई ऐसा है?

20वीं सदी की शुरुआत में जब अल्फ्रेड बिने ने फ्रांस में पहली दफा इस तरह के टेस्ट बनाए तो उनका ऐसा मानना बिलकुल न था। ये टेस्ट स्कूली बच्चों के लिए बनाए गए थे - उन बच्चों का पता लगाने के लिए जिन्हें स्कूल में सीखने के लिए अलग तरीकों या विशेष प्रयास की ज़रूरत होती है। इसका बुद्धिमत्ता से कोई सम्बंध है, ऐसा बिने का मत नहीं था। शायद बिने इस बात को समझते थे कि स्कूली शिक्षा एक खास किस्म का तंत्र और तरीका है जो सबके अनुरूप हो, यह ज़रूरी नहीं। यानी सबको एक ही तरीके से नहीं सिखाया जा सकता और सबको एक ही तराजू में नहीं तौला जा सकता।

पर अंततः आईक्यू टेस्ट ही वह तराजू बन गया जिस पर सभी को मापा जाने लगा। आईक्यू टेस्ट का इस्तेमाल स्कूलों के दाखिले, फौज की भर्तियों और आप्रवासी प्रवासियों की छंटनी में होने लगा। उच्च आईक्यू को आधार बनाकर समूह व संगठन बने। प्रतियोगी परीक्षाओं में आईक्यू आंकना एक आम बात है। आईक्यू टेस्ट वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ समझा जाने वाला एक तरीका बन चुका है जिसके आधार पर व्यापक स्तर पर लोगों को योग्य अथवा अयोग्य करार दिया जाता है।

आईक्यू टेस्ट की राजनीति उलझती गई है। आईक्यू टेस्ट के परिणामों के अध्ययन के आधार पर यह साबित करने की कोशिश की गई कि अश्वेत लोग श्वेतों के मुकाबले कुदरती तौर पर ही कम बुद्धि वाले होते हैं (अश्वेत बच्चों के आईक्यू स्कोर श्वेत बच्चों से औसतन कम थे)। यूजेनिक्स (यानी मनचाही संतति हासिल करने का विज्ञान) में भी आईक्यू को आधार बनाकर एक बेहतर मानव जाति के विकास का सपना देखा गया। मामला कुछ यूं बनता दिखा कि आईक्यू का सीधा और प्रमुख सम्बंध हमारे जेनेटिक गठन और संयोजन से है।

इस मत को चुनौती मिली 'फ्लिन प्रभाव' से। 1980 के दशक में जेम्स फ्लिन ने आईक्यू टेस्ट परिणामों की पड़ताल में पाया कि आईक्यू टेस्ट के स्कोरों में पूरी 20वीं सदी के दौरान पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ोतरी हुई। यह बढ़ोतरी 15-20 प्वांइट के आसपास पाई गई। यानी आपके पिता की पीढ़ी ने जो टेस्ट दिया अगर वही टेस्ट आपकी पीढ़ी दे तो आपकी पीढ़ी का स्कोर औसतन उनसे 15-20 प्वाइंट अधिक होगा। यही 'फ्लिन प्रभाव' है। इस कारण समय-समय पर आईक्यू टेस्ट का नए सिरे से मानकीकरण करना

आईक्यू टेस्ट में 100 के स्कोर को सामान्य या औसत बुद्धिमत्ता का दर्जा मिला है, इससे जितना ऊपर या नीचे आप हैं उतने ही ज़्यादा या कम बुद्धिमान आप हैं। किसी जनसंख्या में सबसे बड़ा हिस्सा उन लोगों का होता है जिनका आईक्यू औसत या उसके आसपास हो। फ्लिन प्रभाव के कारण अगली पीढ़ी का औसत स्कोर 100 से (15-10 प्वाइंट) अधिक न हो, इसके लिए टेस्ट में फेरबदल किए जाते हैं और औसत स्कोर को 100 या उसके आसपास ला देते हैं।

पड़ता है (दूसरे शब्दों में, कठिन बनाना पड़ता है।) गरज यह कि 100 का स्कोर, जिसे मानक स्कोर बनाया गया है, उसकी महिमा बनी रहे।

फ्लिन प्रभाव को समझने-समझाने के लिए यह कहा गया कि आईक्यू का सम्बंध सिर्फ जीन्स से नहीं है बल्कि पोषण, शिक्षा और वातावरण भी इसमें अहम भूमिका निभाते हैं। इस बारे में भी एक मज़ेदार बात सामने आई है: जिन बौद्धिक क्षमताओं का सम्बंध शिक्षा से है - जैसे संख्या या भाषा सम्बंधी कौशल - उन क्षमताओं में पीढ़ी-दर-पीढ़ी कोई खास बढ़त देखने में नहीं आई जबकि वे बौद्धिक क्षमताएं जिनका शिक्षा से खास सरोकार नहीं हैं उनमें काफी ज़्यादा बढ़त देखी गई है - जैसे दो चीज़ों में समानताएं पहचानना।

फ्लिन प्रभाव आईक्यू पर सवालिया निशान लगाता है। फ्लिन प्रभाव के चश्मे से देखें तो सौ साल पहले के हमारे पूर्वज महामूर्ख दिखते हैं और हम जीनियस क्योंकि उनके समय के आईक्यू टेस्ट पर हमारे स्कोर कहीं ज़्यादा होंगे। पर वास्तविक जीवन में ऐसा नज़र क्यों नहीं आता? फ्लिन यह सवाल उठाते हैं और जवाब में कुछ यूं कहते हैं कि बौद्धिक क्षमताओं के कई प्रकार होते हैं और सामाजिक परिदृश्य बदलने के साथ ही कुछ क्षमताओं पर ज़्यादा ज़ोर हो जाता है और कुछ पर कम। तो इस तरह कुछ बौद्धिक क्षेत्रों में आईक्यू ज़्यादा बढ़ता है कुछ में बहुत कम। हालांकि मेरे ख्याल से यह पूरी तरह संतोषजनक उत्तर नहीं है पर यह काबिले गौर है कि सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों और रुझानों तथा आईक्यू के परस्पर सम्बंध के मुद्दे के महत्त्व को माना जा रहा है तथा यह बात भी उभर रही है कि बौद्धिक क्षमताओं की भी किस्में होती हैं।

अगर इस तर्क को आधार बनाया जाए तो यह पूछना वाजिब है कि क्या आईक्यू टेस्ट सभी (महत्त्वपूर्ण) प्रकार की बौद्धिक क्षमताओं को आंकता है? असल जीवन से अलग-थलग एक बंद कमरे में कागज़ पर बने डिज़ाइनों में पैटर्न पहचानने, अंकों के बीच सम्बंध स्थापित करने या काल्पनिक परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया देने से क्या बुद्धिमत्ता की गणना की जा सकती है?

फ्लिन कहते हैं कि आईक्यू सीधा-सीधा बुद्धिमत्ता की माप नहीं। आईक्यू किस चीज़ की माप है, इसका भी कोई सीधा उत्तर नहीं है। यह बात उस परिप्रेक्ष्य में महत्त्व की हो जाती है जिसमें आईक्यू को हमारी दादी-नानी की पहेलियों, विक्रम-वेताल में वेताल द्वारा पूछे गए सवालों या फिर शादी-ब्याह के दौरान खेले जाने वाले कई खेलों की तुलना में वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ माना जाता है। यहां बात सिर्फ संरचना की भी हो सकती है - पहेलियों को भिन्न प्रकारों में बांटकर उन पर अंक दिए जा सकते हैं और एक स्कोर बनाया जा सकता है।

यह याद रखना भी ज़रूरी है कि ऐतिहासिक दृष्टि से आईक्यू टेस्ट आधुनिक दौर की पैदाइश है जिसमें नामकरण, वर्गीकरण और मापन एक जुनून की तरह मौजूद था। यह वह दौर भी था जब मनोविज्ञान खुद को एक विज्ञान के रूप में स्थापित करने की कोशिश में था और आईक्यू टेस्ट ने इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष की बात उठने पर यह भी सोचना होगा कि एक खेती-किसानी करने वाले ग्रामीण की बुद्धिमत्ता, एक बौद्ध भिक्षु की बुद्धिमत्ता और एक बंजारे की बुद्धिमत्ता को क्या हम एक ही परीक्षण से नाप सकते हैं। अगर टेस्ट एक है तो उसकी एक खास दिशा और उद्देश्य होंगे, उसकी सीमाओं को समझना ज़रूरी हो जाता है। उसे एक सार्वभौमिक टेस्ट समझना उचित नहीं। यहां यह भी बताना ठीक होगा कि आईक्यू टेस्ट के अध्ययन बताते हैं कि उनकी विषय वस्तु में नस्लीय और लैंगिक भेदभाव खासी मात्रा में पाए जाते हैं।

मेरा ख्याल है कि आईक्यू टेस्ट बुद्धिमत्ता नापने से ज़्यादा यह इंगित करते हैं कि वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में विज्ञान बुद्धिमत्ता को किस तरह संकल्पित या परिभाषित करता है। अच्छा हो अगर हम ऐसा टेस्ट बना सकें जिससे बेहद कम खर्च में घर चलाने वाली गृहिणी की बुद्धिमत्ता का पता लगा सकें। बुद्धिमत्ता कितनी ज़रूरी है, यह एक बिलकुल अलग सवाल हो सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***